2

अस्मितावादी विमर्श : विविध संदर्भ

सम्पादक
रामचन्द्र रजक

संरचना प्रकाशन
इलाहाबाद

ISBN : 978-93-84999-33-9

कॉपीराइट :
सम्पादक

*

प्रकाशक :
संरचना प्रकाशन
30, थार्नहिल रोड
इलाहाबाद–1

*

वितरक :
राका प्रकाशन
40ए, मोतीलाल रोड
इलाहाबाद–2

*

संस्करण
2017

*

मूल्य : 250/– रुपये मात्र

*

मुद्रक :
संगम ऑफसेट
तालाब नवल राय, इलाहाबाद

अस्मितावादी विमर्श : विविध संदर्भ
द्वारा रामचन्द्र रजक

अनुक्रमणिका

भूमिका 7

1. स्त्री अस्मिता और स्वतंत्रता का सवाल 21
प्रो0 शैल पाण्डेय

2. भूमण्डलीकरण के दौर में स्त्री विमर्श और हिन्दी कहानी 25
डॉ0 लालसा यादव

3. स्त्री–अस्मिता के सवाल और अन्या से अनन्या 37
डॉ0 गौरी त्रिपाठी

4. स्त्री अस्मिता का सवाल : साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार 45
सरिता निर्मल

5. गोपुली गफूरन : एक स्त्री की संघर्ष यात्रा 54
डॉ0 संगीता

6. स्त्री–विमर्श की अवधारणा 60
अखिलेश कुमार

7. दो पाटों के बीच में 81
डॉ0 आदित्य कुमार त्रिपाठी

8. साहित्य में स्त्री अस्तित्व 89
डॉ0 कविता सिंह

9. संस्कृत साहित्य और हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्मिता का प्रश्न 93
डॉ0 अरविन्द कुमार

10. स्त्री विमर्श के अन्तर्विरोध 106
अन्तिमा चौधरी

तावादी विमर्श : विविध संदर्भ

कहानी 'सहसा एक बूंद
समस्या तथा परित्यक्ता
त करने वाली कहानी है।
त्र–पत्रिकाओं, विशेष कर
वित कहानियाँ हैं– जैसे
प्ता की कहानी 'तुम्हारी
छपी कालिंदी सिंह की
कहानी 'स्त्री ही स्त्री पर
था लता शर्मा की कहानी
की कहानी 'सुरंगपार की

ने वाले भूमण्डलीय मूल्य
मूल्य भी पीछे नहीं छूटे
खेकायें, दोनों मूल्यों को
ही है। दूसरे और तीसरे
नीय राजनीति में स्त्री के
ने अनुभव से अन्याय और
खन का विषय बनाया है।

खेतान, पृ0 229

ह, पृ0 57, भारतीय ज्ञानपीठ

शरण जोशी, पृ0 110, वाग्देवी

ध्याय, पृ0 72
ध्याय, लेख– उर्वशी बुटालिया,

स्त्री–अस्मिता के सवाल और अन्या से अनन्या

डॉ0 गौरी त्रिपाठी

स्त्री–अस्मिता स्त्री–विमर्श का प्राणतत्व है, जिसकी तमाम शाखाएँ, उपशाखाएँ, निकल पड़ी हैं। स्त्री–अस्मिता पर हम औपचारिक और अनौपचारिक तरीके से काफी विमर्श कर रहे हैं। कभी सैद्धांतिकी तो कभी कृति के माध्यम से स्त्री सच को सामने लाया जा रहा है। स्त्री ने जब अपनी सामाजिक भूमिका के बारे में सोचना शुरू किया वहीं से स्त्री–विमर्श, स्त्री–आंदोलन, स्त्री–अस्मिता की अनौपचारिक शुरूआत मानी जाती है। स्त्री–आंदोलन में जहाँ स्त्रियों की सामाजिक राजनैतिक भागीदारी को स्वीकार किया जाने लगा, वहीं स्त्री–विमर्श स्त्री को बहस के केन्द्र में लेकर आती है, जिसमें समानता, स्वतंत्रता व स्त्री–अस्मिता जैसे प्रश्न उठाये जाते हैं।

स्त्री लेखन के क्षेत्र में महिलाएँ लगातार कलम चला रही हैं। इनमें एक साहसिक विधा है आत्मकथा। यह आत्मकथा लिखना वैसे ही बहुत मुश्किल काम है, स्त्रियों के लिए यह चुनौती बन जाता है। इन आत्मकथाओं से उनकी निजी–जीवन और सामाजिक जीवन की पड़ताल की जाती है। आत्मकथाओं की शुरूआत हम 18वीं शताब्दी से मानते हैं, उस समय कोई महान व्यक्ति ही आत्मकथा लिखता था। हिन्दी में आत्मकथा लेखन अन्य भाषाओं की तुलना में बाद में शुरू होता है। आत्मकथा लिखना हमेशा से चुनौती पूर्ण रहा है। उस पर यदि स्त्री, सच्चाई से लिखे तो निश्चित है वह घर और समाज दोनों से बेदखल हो जाय।

@gmail.com